CONTENTS

INDEX

TITLE	Page(s)
WORKPLACE ENVIRONMENT AND ITS IMPACT ON ORGANISATIONAL PERFORMANCE IN PUBLIC SECTOR ORGANISATIONS **Dr. Amit kr. Jain, Dr. J.K Sharma**	**02**
SERVICE QUALITY ASSESSMENT IN SELECTED HOSPITALS WITH SPECIAL REFERENCE TO KURUKSHETRA DISTRICT IN HARYANA **Dr. Ranjeet Verma, Parmod Kumar Singhal, Mr. Sunil Kumar**	**23**
PERSPECTIVE ON VALUE ORIENTED TEACHER EDUCATION IN INDIA **Dr. Poonam Singh Kharwar**	**37**
THE ROLE OF ICT IN HIGHER EDUCATION FOR THE 21ST CENTURY: ICT AS A CHANGE AGENT FOR EDUCATION **Dr. Shivpal Singh, Mr.Rakesh Kumar Keshari**	**48**
पहाड़ी तथा मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले स्नातक स्तर विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन प्रो० बी० सी० दुबे ,वर्षा पन्त	**61**
स्नातक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार का अध्ययन प्रो0 भावेश चन्द्र दुबे , सोनम	**72**

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research ISSN NO 2454-7522
ISSUE: 02 Vol: 1, No. 2 October – December 2015

''स्नातक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार का अध्ययन''

प्रो0 भावेश चन्द्र दुबे
सोनम

सारांश

स्नातक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियो के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार का अध्ययन मे गाजियाबाद जिले मे किया गया इसमे 160 विद्यार्थी ग्रामीण तथा 160 विद्यार्थी शहरी लिये गये जिसमे ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियो के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार के छः कारक मे दूसरे बच्चो के प्रति दृष्टिकोण को छोड़कर सभी के मध्य सार्थक अन्तर है । प्रस्तुतीकरण कौशल, अन्तक्रिया कौशल का उच्च स्तर वार्तालाप कौशल, सामाजिक एकता, दूसरो बच्चो के प्रति दृष्टिकोण व व्यस्क के प्रति दृष्टिकोण का स्तर निम्न दर्शाता है ।

प्रस्तावना

मानव जीवन मे शिक्षा की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है । प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी समाज मे जन्म लेता है समाज द्वारा कुछ विकासात्मक कार्य या अधिगम अुभूतियॉ प्रत्येक उम्र के लिये निर्धारित की जाती है । जिसे उस आयु के प्रत्येक व्यक्ति को सीखने की प्रत्याशा होती है । प्रत्येक सामाजिक समूह अपने सदस्यो को कम–से–कम दो चीजे सीखने की उम्मीद अवश्य रखता है ।

सामाजिक भूमिका से तात्पर्य एक ऐसे प्रचलित या प्रथागत व्यवहारो के पैटर्न से होता है जिसे सामाजिक समूह के सदस्यो द्वारा परिभाषित किया जाता है । सामाजिक भूमिका सदस्यो द्वारा सीखे जाते है । जैसे व्यक्ति एक पिता, पति, शिक्षक, छात्र, नेता आदि की भूमिका को सीखता है । एक व्यक्ति का व्यवहार जब सामाजिक प्रत्याशा के अनुकूल होता है । प्रत्येक व्यक्ति का जन्म एक समाज मे होता है और जन्म के समय वह ना तो सामाजिक होता है, न असामाजिक और न समाज विरोधी है । वह समाज के अन्य व्यक्तियो के साथ अनत क्रिया करके कुछ सामाजिक अनुभूतियॉ प्राप्त करते है । तथा एक खास तरह की सामाजिक मनोवृत्ति विकसित करता है वह इस तरह की मनोवृत्ति एवं अनुभूतियों का घर मे तथा घर के बाहर साथियो के साथ अन्तः क्रिया करके सीखता है । सामाजिक स्वीकृति से तात्पर्य एक ऐसी सामाजिक अवस्था से होती है जिससे यह पता चलता है कि व्यक्ति अपने समूह मे कितनी अधिक लोकप्रिय है । कोई भी समूह व्यक्ति पर कितना प्रभाव डाल सकने मे सक्षम होता है ।

1. गुप्ता (1977) व्यक्तित्व लक्षण का अध्ययन समायोजन स्तर, शैक्षणिक उपलब्धि और व्यावसायिक सफल शिक्षक का रवैया ।
2. पोरवाल (1982) संतुष्ट के व्यक्तित्व लक्षण की पहचान करने और असंतुष्ट शिक्षको की पहचान करना ।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान उपरोक्त तथ्य एवं अध्ययन से स्पष्ट हो रहा है कि मानवीय व्यक्तित्व समायोजन एवं क्रिया कलापो मे अधिक तीव्र गति से बदलाव आता जा रहा है । दिन–प्रतिदिन सामाजिक सम्बन्धो की ट्रिस्टता वैज्ञानिक उपकरण के अविष्कार तथा मनुष्य की आकाक्षाएँ बढ़ी तीव्र गति से बदल रही है जिससे मनुष्य के आस–पास जो घटनाएँ घटित हो रही है उसका उचित कारण बताए जाना सम्भव नही हो पा रहा है। मनुष्य के पोषण मे पशु की प्रवृत्ति ज्यादा दिखाई दे रही है । इसलिये हर व्यक्ति को अपने आस–पास गतिविधियो से सजग एवं क्रियाशील रहना पड़ेगा तथा सामाजिक मापदण्डो के बदले परवेश मे व्यक्ति द्वारा किया गया सामाजिक व्यवहार कभी स्वीकार तो कभी अस्वीकार किया जा रहा है । सर्ववादित है कि शिक्षा बालक की सामाजिक समायोजन के उपयुक्त बनाती है । अतः यह प्रश्न है कि सजग और असजग रहने वाले बालको का उनमे सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार पर क्या प्रभाव है यह जॉच का विषय है इसी तथ्य को ध्यान मे रखकर अध्ययनकर्ती ने प्रस्तुत समस्या का चयन किया है ।

समस्या का कथन

सामाजिक स्तर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन ।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण विद्यार्थी के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन ।
2. शहरी विद्यार्थी के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन ।
3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन ।

परिकल्पना

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार के प्रभाव पर कोई सार्थक अन्तर नही है ।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन मे जनसंख्या के रूप मे गाजियाबाद जनपद के स्नातक स्तर ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी इस अध्ययन की जनसंख्या होगे ।

न्यार्दश

प्रस्तुत अध्ययन सम्भावित के याच्छिक विधि का प्रयोग करते हुये 160 ग्रामीण व 160 शहरी स्नातक स्तर के विद्यार्थियो का चयन किया जायेगा ।

सारणी नं.–1

ग्रामीण विद्यार्थी के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार का अध्ययन

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

सा0 कौशल समस्यात्मक व्यवहकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	स्तर
प्रस्तुतीकरण कौशल	15.26	2.41	उच्च
अन्तक्रिया कौशल	10.65	1.9	निम्न
वार्तालाप कौशल	29.41	4.49	निम्न
सामाजिक एकता	28.98	3.76	निम्न
दूसरो बच्चो के प्रति दृष्टिकोण	19.74	4.31	निम्न
व्यस्क के प्रति दृष्टिकोण	25.48	3.81	निम्न

उपरोक्त सारणी नं0–1 के माध्यम से उद्देश्य नं0–1 ग्रामीण विद्यार्थियो के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार का अध्ययन किया गया जिसमे सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार के कारको प्रस्तुतीकरण कौशल के प्रश्नावली द्वारा प्राप्त प्राप्तांक का औसतमान 15.26 प्राप्त हुआ जो प्रश्नावली के डंदनंस के सारणी नं0–2 के आधार पर उच्च स्तर को दर्शाता है लेकिन अन्तक्रिया कौशल, वार्तालाप कौशल, सामाजिक एकता, दूसरे बच्चो के प्रति दृष्टिकोण, व्यस्क के प्रति दृष्टिकोण को कारको का औसतमान 10.65, 29.41, 28.98, 19.74 व 25.48 जो डंदनंस के सारणी नं0–2 के आधार पर निम्न स्तर को दर्शाता है । जिसमे स्पष्ट है सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार के कारक प्रस्तुतीकरण का कौशल का स्तर उच्च होता है एवं अन्तक्रिया कौशल, वार्तालाप कौशल सामाजिक एकता, दूसरे बच्चो के प्रति दृष्टिकोण, व्यस्क के प्रति दृष्टिकोण का स्तर निम्न होता है ।

सारणी नं.–2

शहरी विद्यार्थी के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार का अध्ययन

सा0 कौशल समस्यात्मक व्यवहकार	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	स्तर
प्रस्तुतीकरण कौशल	16.36	3.80	उच्च

अन्तक्रिया कौशल	11.61	2.27	उच्च
वार्तालाप कौशल	27.15	6.66	निम्न
सामाजिक एकता	26.77	6.80	निम्न
दूसरो बच्चो के प्रति दृष्टिकोण	18.34	4.32	निम्न
व्यस्क के प्रति दृष्टिकोण	23.7	5.11	निम्न

उपरोक्त सारणी नं0–2 के माध्यम से उद्देश्य नं0–2 शहरी विद्यार्थियो के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार का अध्ययन किया गया जिसमे सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार के कारको प्रस्तुतीकरण कौशल एवं अनतक्रिया कौशल के प्रश्नावली द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों का औसतमान क्रमशः 16.36 व 11.61 प्राप्त हुआ जो प्रश्नावली के डंदनंस के सारणी नं0–2 के आधार पर उच्च स्तर को दर्शाता है लेकिन वार्तालाप कौशल, सामाजिक एकता, दूसरे बच्चो के प्रति दृष्टिकोण एवं व्यस्क के प्रति दृष्टिकोण को कारको का औसतमान क्रमशः 27.15, 26.77, 18.34, 23.7 जो डंदनंस के सारणी नं0–2 के आधार पर निम्न स्तर को दर्शाता है । जिससे स्पष्ट है सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार के कारक प्रस्तुतीकरण एवं अन्तक्रिया कौशल का स्तर उच्च होता है एवं वार्तालाप कौशल सामाजिक एकता, दूसरे बच्चो के प्रति दृष्टिकोण, व्यस्क के प्रति दृष्टिकोण का स्तर निम्न होता है ।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

सारणी नं.–3

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन ।

सा0 कौशल समस्यात्मक व्यवहकार	क्षेत्र	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन वृद्धि	टी प्राप्तांक	अन्तर की सार्थकता
प्रस्तुतीकरण कौशल	ग्रामीण	15.26	2.41	.34	3.23	हैं
	शहरी	16.36	3.80			

अन्तक्रिया कौशल	ग्रामीण	10.65	1.9	.32	9.6	हैं
	शहरी	11.61	2.27			
वार्तालाप कौशल	ग्रामीण	29.41	4.49	.62	5.94	हैं
	शहरी	27.15	6.66			
सामाजिक एकता	ग्रामीण	28.98	3.76	.68	4.91	हैं
	शहरी	26.77	6.80			
दूसरो बच्चो के प्रति दृष्टिकोण	ग्रामीण	19.74	4.31	.46	1.4	नही
	शहरी	18.34	4.32			
व्यस्क के प्रति दृष्टिकोण	ग्रामीण	25.48	3.81	.46	6.8	हैं
	शहरी	23.7	5.11			

विशेषण

उपरोक्त सारणी के माध्यम से ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसमे सामाजिक कौशल समस्यात्मक मे छः कारक प्रस्तुतीकरण कौशल, अन्तक्रिया कौशल, वार्तालाप कौशल, दूसरे बच्चो के प्रति दृष्टिकोण पर प्रश्नावली के माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं प्रमाणिक विचलन त्रुटि ज्ञात करते हुये 't' प्राप्तांक की गणना की गई जिसमे दूसरो बच्चो के प्रति दृष्टिकोण कारक का मान स्वतन्त्रता अंश 320 सार्थकता स्तर .01 के सारणीमान 2.253 से कम पाया गया लेकिन सभी कारको मे गणनात्मक मान सारणीमान से ज्यादा पाया गया अतः परिकल्पना नं0–1 को अस्वीकार करते है 99 प्रतिशत विश्वास के साथ ये कहा जा सकता है ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल समस्यात्मक व्यवहार के सभी कारक मे एक कारक दूसरो बच्चो के प्रति दृष्टिकोण को छोड़कर सभी के मध्य सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष

उपरोक्त शोधकर्ता ने अध्ययन करते हुए पाया कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों को बच्चो दूसरो बच्चे के प्रति समाजिक का व्यवहार मे सार्थकता नही दिखाई गयी जिसका कारण वर्तमान मे पारिवारिक स्थितियों व सामाजिक व्यवहार का अभाव पाया गया जिसके कारण दूसरो के प्रति अभाव पाया जाता है । जबकि अन्य सभी

कारको मे सार्थकता मे पाई जबकि अन्य सभी कारको में सार्थकता मे पाई गई जो शहरी ग्रामीण दोनो मे पाया गया है ।

शैक्षिक निहार्थ

1. यह शोध प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी मे भी किया जा सकता जो अविषय का निर्धारण करता है ।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु शोध किया जाना चाहिए ।
3. शिक्षको हेतु शोध कार्य पर बल देना चाहिए ।

सुझाव

1. व्यक्तित्व विकास पर जोर देना चाहियें ।
2. बालको के व्यवहार सम्बन्धित शिक्षको के व्यवहार हेतु ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाठक, पी0डी0 (1974) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याऐं बिनो पुस्तक मन्दिर ।
2. भार्गव, महेश (2010) आधुनिक मनोविज्ञान आगरा, राखी प्रकाशन।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522